इन इन्स्टी इन्स्टीट्यूट के केन्द्र चेन्नई, भोपाल, लखनऊ, पटना आदि में स्थित है।

ज्ञान-आधारित उद्योग

ज्ञान आधारित उद्योग मुख्यतः सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology – IT) से संबंधित है। यद्यपि यह भारत में एक नया उद्योग है, इसने देश में के आर्थिक ढाँचे तथा लोगों की जीवन-शैली में बहुत बड़ी क्रांति ला दी है। भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग हमारी अर्थव्यवस्था में सबसे तीव्र गति से उन्नति करने वाला उद्योग है, जिसने पिछले एक दशक में 50 प्रतिशत से अधिक मिश्रित वार्षिक वृद्धि दर्ज की है। सन् 1996-97 में 6,300 करोड़ रूपए के सॉफ्टवेयर का उत्पादन हुआ, जो 2001-02 में बढ़कर 48,134 करोड़ रुपये का हो गया। ~~इस प्रकार पाँच वर्षों की~~

लेकिन हार्डवेयर क्षेत्र में भारत ने कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं की है। दक्षिण कोरिया, ताइवान और चीन जैसे देशों ने हार्डवेयर के क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। भारतीय हार्डवेयर का निर्यात 1997-98 में 3,000 करोड़ रूपए से घटकर 1999-2000 में केवल 1,400 करोड़ रूपए ही रह गया, परंतु इसके बाद 2001-02 में यह 5,871 करोड़ रूपए हो गया। ~~इस प~~

17/10/19

सूती वस्त्र उद्योग का स्थानीयकरण हुआ है —

1. मध्यप्रदेश — इस राज्य में सूती वस्त्र की 50 कारखाने हैं। यहाँ इन्दौर, देवास, ग्वालियर, भोपाल आदि सूती वस्त्र उद्योग के केन्द्र हैं।

2. उत्तर प्रदेश — इसे उत्तरी भारत का मानचेस्टर भी कहते हैं, यहाँ सूती वस्त्र की 52 मिले हैं। यहाँ विशाल बाजार, सस्ते कुशल श्रमिक, परिवहन, उत्तम सुविधाओं के कारण यहाँ वस्त्र उद्योग विकसित हुआ है। मोदीनगर, अलीगढ़, आगरा तथा लखनऊ आदि प्रमुख केन्द्र हैं।

3. आन्ध्र प्रदेश — यहाँ अधिकांश सूती वस्त्र की मिलें, गोदावरी, हैदराबाद, तिरूपति आदि में स्थापित हैं।

4. पंजाब — यहाँ लगभग 30 मिले हैं जो अमृतसर, लुधियाना तथा फगवाड़ा में स्थित हैं, यहाँ यह उद्योग प्रगति कर रहा है।

चीनी उद्योग (Sugar Industry)

गन्ने के रस से चीनी, गुड़, खाँड बनाने का कार्य देश में प्राचीन समय से ही हो रहा है। देश में आधुनिक ढंग से चीनी बनाने का प्रयास डच व्यवसायी द्वारा 1840 में उत्तरी बिहार में किया गया जो सफल नहीं हुआ, बाद में ब्रिटिश सरकार द्वारा

औद्योगिक नीति – उद्योग प्रायः ऐसे क्षेत्रों में स्थापित किए जाते हैं, जहाँ पहले से ही उद्योग विद्यमान हैं अथवा वह क्षेत्र राजनीतिक दृष्टि से बहुत प्रभावशाली हो, छत्तीसगढ़ के भिलाई में इस्पात कारखाने की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों में औद्योगीकरण को शुरू करना था।

3. औद्योगिक जड़त्व अथवा प्रारम्भिक संवेग – (Industrial Inertia or Momentum of Early Start) – कुछ उद्योग भौगोलिक परिस्थियों के कारण स्थापित हो जाते हैं, परंतु जब वे भौगोलिक सुविधाएँ वहाँ पर समाप्त हो जाती हैं, तब भी वे उद्योग वहाँ पर बने रहते हैं। अलीगढ़ में ताला तथा जबलपुर में बीड़ी बनाने के उद्योग इसके उदाहरण हैं।

4. बैंकिंग सुविधा – उद्योग-धंधों में रोज करोड़ों रुपये का लेन-देन होता है, जो बैंकों द्वारा ही संभव है। अतः जिन क्षेत्रों में बैंकों की सुविधा हो, वहाँ उद्योग-धंधों के विकास में सहायता मिलती है।

5. बीमे की सुविधा – बड़े-बड़े उद्योगों में भारी मशीनों को अचानक क्षति पहुँचने का भय रहता है। इसके अतिरिक्त, श्रमिकों की औद्योगिक दुर्घटना से मृत्यु हो जाती है। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए बीमे की सुविधा का होना आवश्यक है।

REDMI NOTE 8 48MP QUAD CAMERA
Scanned with CamScanner

v) पूँजी प्रधान उद्योग – इन उद्योगों में अत्यधिक पूँजी की आवश्यकता होती है, लोहा-इस्पात, तथा एल्यूमीनियम उद्योग पूँजी प्रधान उद्योगों के उदाहरण हैं।

vi) श्रम प्रधान उद्योग – ये उद्योग अधिक श्रम पर आधारित हैं, इनमें पूँजी की अपेक्षा सस्ते एवं कुशल ~~सस्ते~~ श्रम की उपलब्धता अधिक महत्वपूर्ण है, जूता तथा बीड़ी बनाने के उद्योग श्रम प्रधान उद्योग हैं।

Q3.

Ans उद्योगों को प्रभावित करनेवाले कारकों को दो वर्गों में बाँटा जाता है–

(क) भौगोलिक कारक तथा (Geographical Factors)
(ख) गैर-भौगोलिक कारक। (Non-Geographical Factors)

(क) भौगोलिक कारक (Geographical Factors)– उद्योगों ~~में~~ को प्रभावित करनेवाले मुख्य भौगोलिक कारक निम्नलिखित हैं:

1. कच्चा माल – सामान्यतः उद्योग उन्हीं स्थानों पर स्थापित किए जाते हैं, जहाँ कच्चा माल उपलब्ध होता है। कच्चा माल उद्योगों के लिए चुंबक का कार्य करता है, जिन उद्योगों में निर्मित वस्तुओं का भार,

12/10/19

iii) छोटे पैमाने के उद्योग – ग्रामीण, लघु तथा घरेलू उद्योग छोटे पैमाने के हैं, जो व्यक्तिगत परिवारों तक ही सीमित हैं। सभी उद्योगों से अधिक व्यक्तियों को रोजगार मिलता है प्रदान करते हैं, इसमें परिवार के सदस्य मिलकर सरल विधियों से वस्तु – निर्माण करते हैं, इन उद्योगों को अच्छे कच्चे माल, संगठित बाजार की कमी का सामना करना पड़ता है। इसलिए ये उद्योग ग्रामीण लोगों की आवश्यकता पूरी करते हैं।

कच्चा माल तथा निर्मित वस्तुओं के आधार पर

i) भारी उद्योग – ये भारी कच्चे माल का प्रयोग करते हैं और भारी वस्तुओं का निर्माण करते हैं। जैसे – लोहा -इस्पात उद्योग इसका अच्छा उदाहरण है

ii) हल्के उद्योग – ये हल्के कच्चे माल का प्रयोग करते हैं तथा हल्के वस्तुओं का निर्माण करते हैं। जैसे – वस्त्र उद्योग, पंखे, सिलाई की मशीन आदि।

स्वामित्व के आधार पर

सन् 1951 में स्वामित्व के आधार पर तीन प्रकार के उद्योगों को मान्यता दी गई:

i) सार्वजनिक उद्योग – इनमें भारी तथा आधारभूत उद्योगों सम्मिलित हैं, इन संचालन सरकार स्वयं

REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner